क्रोध

- ✶ दुसरों के अपराध के लिए स्वंय शिक्षा देने की क्रिया को क्रोध कहते है । क्रोध की अग्नी अपने सहित सबका नाश करती है ।
- ✶ क्रोध को प्रेम से पराजित करना, भानको नम्रता से रोकना और ऋजुता से छल-कपट का नाश करना यही कर्मजाल से मुक्त होने का मार्ग है ।
- ✶ क्रोध से मित्रता नष्ट होती है, वैरभाव बढता है, बुद्धि मलिन होती है, इसीलिए क्रोध को महाभयानक शत्रू कहा जाता है ।
- ✶ क्रोधादि विकार अज्ञान से निर्माण होते है, लेकिन अज्ञानी अपने अपराध का दोष दूसरे के माथेपर लगाता है ।
- ✶ क्रोध को क्रोध से नहीं क्षमा से पराजित करना चाहिए,अभिमान को ऋजुता से , लोभ को संतोष से जितना चाहिए । घणा को जितना प्रेम से चाहिए ।
- ✶ क्रोध अग्निकेसमान सहांरक है, उसमें धर्म , अर्थ , काम भस्म होते है ।
- ✶ कुछ लोग क्रोधावेश आकर हिंसा करते है, कुछ लोग आशा से हिंसा करते है, लेकिन हिंसा केकटुफल का उपभोग लिए बिना आदमी छूट नहीं सकता ।
- ✶ क्रोध से प्रीती नष्ट होती है, माया से विनय नष्ट होता है, कपटाचारी आचरण से मित्रता नष्ट होती है । और लोभ सद्‌गुणों का नाश करता है । क्रोध यह दुर्बलता की निशानी है ।
- ✶ सौंदर्यदृष्टी मौनको शब्द में परिवर्तीत करती है, दयार्द्र दृष्टी विरोध को अनुकूल करती है, लेकिन क्रोधांध दृष्टि सौंदर्य को कुरू पता लाती है ।
- ✶ क्रोध मूर्खता से शुरु होता है, और पश्चाताप में बदलता है ।

शांती

- ✶ मनुष्य केलिए शांती ही स्वाभाविक और सुखप स्थिती है ।

✶ शांती की विजय यह युद्व केविजय से महत्वपूर्ण है ।

✶ जहॉ बुद्विकेनिर्णय से शासन किया जाता है वहॉ शांती का सामर्थ्य बढता है । शांतता का दूसरा नाम निरंतर समाधान है ।

✶ तुम्हारे अंतरंग में शांती नहीं तो उसकी खोज बाहर करने से क्या लाभ ? त्याग में शांती का निरंतर निवास रहता है ।

✶ जो ममता और अभिमान का त्याग करते है, उनकेमन को असीम शांती प्राप्त होती है ।

✶ जब ह्रदय और मन दोंनो शांत रहते है, तभी आदमी को विश्राम मिलता है ।

✶ मन:शांती की मौलिकता संपत्ती और स्वास्थ्य से अधिक है ।

✶ जिसका मन शांती से भरा हुआ है उसको विश्व भी शांतीसे परिपूर्ण दिखाई देता है ।

✶ मन की शांती अंतरंग केपरिवर्तन से होती है, बाह्य परिवर्तन से नहीं ।

✶ शांती से क्रोध को, नम्रता से अभिमान को, सरलता से कपट को और संतोष से लोभ को जीतना चाहिए ।

आत्मा की शांती यही सच्चा सुख है आत्मा केवश में होनेकेकारण सभी लोग उसे प्राप्त कर सकते है । इंद्रिय सुख प्रेयस और आत्मसुख श्रेयस है । इसीको शांती कहते है ।

शिक्षा

✶ अंतर्मुखता याने शिक्षा का प्रारंभ है ।

✶ सच्ची शिक्षा सत्य का दर्शन कराती है, उसका पालन कराती है और वही उसका ध्येय होता है ।

✶ सफल शिक्षा, यशस्वी जीवन की नींव है ।

✶ मृत्यू याने चेतना का अंत ! शिक्षा याने चैतन्य का अविष्कार !

✶ पढने मनुष्य सुशिक्षित बनता है, और शिक्षा से पक्व बनता है ।

✶ शिक्षा व्यक्ति का समाजिमुख विकास करती है ।

- ✶ सुक्ष्म निरीक्षण , अनुभूती और अध्ययन , ये शिक्षा केप्रमुख अंग है ।
- ✶ शिक्षा केउदात्त ध्येय में केवल ज्ञान अपेक्षित नहीं, कृति भी चाहिए ।
- ✶ शिक्षा और सच्चाचारित्र्य आत्मारुपी जहाज का लंगर है ।
- ✶ युवावस्था में हि बच्चों को पढाओ, नहीं तो वृद्धावस्था में वे तुम्हे पढाऐंगे ।
- ✶ युवकोंको ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए , कि वे स्वंय एक आदर्श जीवन जी सके।
- ✶ शिक्षा का याने जन्मसे मृत्यू तक सभी वातावरण का परिणाम सर्व प्रकार की शिक्षा , शिस्त और संस्कृती की बेरीज है ।
- ✶ जीनेकेलिए प्राप्त की हुई शिक्षा कला है , और जीवन का विकास करनेवाली शिक्षा विघा है ।
- ✶ बालक की शिक्षा उसकेजन्म से ही शुरु होती है । बचपन में बोला गया प्रत्येक शब्द उसका स्वभाव बनाने में कारण बनता है ।

शत्रु

- ✶ जब घर का आदमी शत्रुत्व केलिए बाहर निकलता है , तब वह बाहरकेशत्रुसे अधिक क्रुर बनता है ।
- ✶ आलसीपन यह व्यक्ति केहरेक कार्य केबीचमें आनेवाला प्रबल शत्रु है ।
- ✶ शत्रुकी ओरसे की गई स्तुति , यह सबसे श्रेष्ठ कीर्ती है ।
- ✶ आलस्य , अज्ञान और अंधश्रद्धा यह आदमी केसबसे बडे शत्रु है ।
- ✶ तुम्हारे शत्रु केलिए जो अग्नि प्रज्वलित करोगे उसमें तुमही जलकर भस्म हो जाओगे ।
- ✶ मनुष्य स्वंय ही स्वंय का मित्र और शत्रु है ।
- ✶ कोई भी शत्रु छोटा नहीं होता । शत्रु को कभी दुर्बल नहीं समझना चाहिए ।
- ✶ पंचेंद्रिय हमारे शत्रु है, उन्हे जीतकर उन्हे तुम अपना मित्र बना सकते हो । शत्रु और रोगकी उपेक्षा नहीं करना चाहिए ।

✶ मूर्ख मित्र से बुद्विमान शत्रु अच्छा । छोटे शत्रुको उपाय से पराजित करना चाहिए । बिल्लिही चूहेको मार सकती है, उसकेलिए सिंह की जरुरी नहीं ।

✶ दारिद्र्य , रोग और मूर्खता ये तीन आदमीकेसच्चे शत्रु है । जो तिनोंकेविरुद्ध लडता है वह सच्चा वीर है ।

✶ पाप का उदय होनेपर मित्र भी शत्रु बन जाता है ।

✶ कुविचार आदमी केप्रबल शत्रु है । धर्मात्मा को शत्रु नहीं होते । जिसको शत्रु है वह धर्मात्मा नहीं बन सकता ।

✶ बाह्य शत्रुसे अंतरंग केशत्रु अधिक त्रस्त करते है, बाहरी शत्रु आते हैं और नष्ट भी हो जाते है ।

स्त्री

✶ जहॉ स्त्रियोंको सन्मान होता है वहॉ देवता प्रसन्न होते है ।

✶ स्त्रीका ह्रदय पवित्र बनता है, तब उसकेसिवा मृदु-कोमल चीज होहि नहीं सकती ।

✶ स्त्रीयों का सन्मान करो, तब वे अपना जीवन स्वर्गीय और फुलोंकेसमान सुगंधी बनाती है ।

✶ जिस घरमें सद्गुणी सुलक्षणी स्त्री निवास करती है, वहॉ देवताऍ भी निवास करती है ।

✶ स्त्रीको पतिकी , सखी , कन्या और कभी कभी माता भी बनना पडता है, केवल पत्नी होकर काम नहीं चलता । स्त्री क्षण की पत्नी और अनंतकाल की माता है।

✶ स्त्रीका मन उपहाऊ जमीन केसमान है˙ उसमें आदर का बीज बोनेपर छायादार वृक्ष बनता है और उसको प्रेम केफल आते है ।

✶ स्त्री सबकुछ कर सकती है , लेकिन अपनी इच्छाकेविरुद्ध नहीं कर सकती ।

✶ दुनियाकेमुल्यवान वस्तुओं में सबसे मुल्यवान वस्तु है सद्गुणी स्त्री ।

✶ कंटकमय वृक्षको पुष्प सुशोभित करते है, उसी प्रकार सुशील स्त्री गरीब आदमी केघरको स्वर्ग बनाती है ।

✶ श्रद्धा , शील , लज्जा , संकोच , श्रम , त्याग और प्रज्ञा ये धनकेप्रकार है । इस धनसे युक्त स्त्रीका जीवन सफल है ।

✶ शील और लज्जा ये स्त्रीयों केआभूषण है । स्त्री यह त्यागकी अहिंसक मूर्ति है।

✶ स्त्री शांती , शक्ति , स्नेह , क्षमा , धैर्य, त्याग , सौंदर्य , माधुर्य आदि गुणोंका प्रतीक है । इसीलिए उसे गृहलक्ष्मी कहा जाता है ।

परोपकार-भलाई

✶ आप दूसरों केसाथ जितना अच्छा व्यवहार करोंगे , उतनीहि अच्छाई तुम्हे प्राप्त होगी ।

✶ अच्छाई से व्यवहार करना यह मनुष्य का श्रेष्ठ कर्तव्य है ।

✶ भलाई केमार्गमें डरका वास्तव्य है, लेकिन उसका फल भी अच्छा मिलता है ।

✶ जो दूसरों का भला करता है परमेश्वर उसका भी भला करता है , क्योंकि भलाई कृतिमें होती है , परिणाम में नहीं ।

✶ जो भलाई में प्रेम करता है , वह भगवान की उपासना करता है, आदरणीयोंका सन्मान करता है और निरंतर भगवान केपास निवास करता है ।

✶ परोपकारी व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का नुकसान करना नहीं जानता ।

✶ अंध:कार में छोटासा दिपक भी दूरतक प्रकाश फैलाता है , उसी तरह भलाई का प्रकाश भी दूर-दूरतक फैलता है ।

✶ दुर्जनों केसाथ अच्छा व्यवहार करना, याने सज्जनों केसाथ बुरा व्यवहार करना है ।

✶ परोपकार करनेवाले कभी भी फल की अपेक्षा नहीं करता ।

✶ मरने केबाद मनुष्य की भलाई हि उसकेपीछे रहती है, बाकी सब नष्ट हो जाता है ।

✶ भलाई या परोपकार सूवर्णभस्म से भी अधिक गुणकारी है ।

✶ परोपकार करकेउसका निर्देश करना याने शत्रुता करने केसमान है ।

धन-धनवान

- ✶ धनवान बननेपर आदमी में परिवर्तन आता है । धनकी लालसा आदमी को पशु बनाती है ।
- ✶ जो धन कमाता है, लेकिन खर्च नहीं करता ,वह बोजा ढोनेवाले पशु केसमान है । धनसे केवल भय और दु:ख की प्राप्ती होती है ।
- ✶ धनलोभी व्यक्ति का कोई पिता नहीं. संबंधी नहीं और कोई मित्र नहीं । धन याने राष्ट्र का जीवनरुपी रक्त है ।
- ✶ धन यह उत्तम सेवक है, लेकिन अत्यंत दुष्ट स्वामी है ।
- ✶ यदि धन को ईश्वर माना , तो वह तुम्हे सैतान केसमान भ्रष्ट करेगा ।
- ✶ धनरुपी सागर में तुम्हारी प्रतिष्ठा, ह्रदय और सत्य डुब जाता है ।
- ✶ धन अग्नि केसमान है । वह व्यय करते समय भी जलाता है , और पास रखने पर भी जलाता है ।
- ✶ उदार ह्रदय केबिना धनवान व्यक्ति भी भिकारी ही रहता है ।
- ✶ धनवान आदमी की आर्थिक अवस्था बिगडनेपर ही उसे भगवान की याद आती है । धन चंचल है , उसे अस्थिरता का शाप है ।
- ✶ धनप्राप्ती , आरोग्य, स्नेहमयी पत्नी ,आज्ञाकारी पुत्र और अर्थोपादक विघा इन छह बातों की उपलब्धि से आदमी सुखमय जीवन बिता सकता है ।
- ✶ दुनिया में हर एक जगह पैसे जरुरत होती है, उसकेबिना आदमी जिवीत नहीं रह सकता।आत्मा की खोजकेमार्ग में भी हर एक जगह पुरुषार्थ की जरुरत है।
- ✶ धनसे प्रतिष्ठा बढती है और धनसे धर्मवृद्धि होती है ।

विश्वास

- ✶ विश्वास में जीवन की कला है । सब वरदानों का आधार विश्वास है ।
- ✶ विश्वास ऐसा पक्षी है, जो उष:काल केपहिले अंधेरे में प्रकाश की अनुभूति लेता है ।
- ✶ विश्वास यह प्रेमकी प्रथम सिढी है । अज्ञान से विश्वास प्रकट नहीं हो सकता है।
- ✶ विश्वास का दुसरा नाम जीवन है, और संशय याने मृत्यू ।
- ✶ गहन विश्वास यही महान कार्य का जनक है ।
- ✶ विश्वास आदमी को जीवीत रखनेवाली शक्ति है । विश्वास का अंत याने जीवन का अंत है ।
- ✶ विश्वासपर विश्वास ,स्वयंपर विश्वास और भगवानपर विश्वास विश्वास यही मानवता का रहस्य है ।
- ✶ प्रेम सभीपर करों, विश्वास कुछ लोगोंपर करो , लेकिन द्वेष किसी का भी मत करो ।
- ✶ भगवानपर विश्वास रखनेवाले व्यक्ति की सभी अनिष्ट प्रवृत्तियॉ नष्ट हो जाती है।
- ✶ विश्वास से विश्वास संपादन किया जाता है । लेकिन उस विश्वास को संपन्नता और चारित्र्य का साथ चाहिए ।
- ✶ अप्रामाणिक व्यक्ति केउच्च विचार से भी विश्वासु आदमी की गलती श्रेष्ठ है ।
- ✶ अपना अंतरीक विश्वास याने भगवान का आधिष्ठान ।
- ✶ विश्वास से ही विश्वास निर्माण होता है और अविश्वास से अविश्वास यही प्रकृतिका नियम है ।

ध्येय-साध्य

- ✶ ध्येय केलिए जीना , ध्येय केलिए मरने से कठीण है ।
- ✶ एकही उद्देश से बंधे हुए लोग कहीं भी गये तो इकठ्ठे आते है ।
- ✶ ध्येय जितना महान उतना उसका मार्ग भी लंबा और कठीण है ।

- ✶ अपयश नहीं लेकिन कनिष्ट ध्येय यह गुनाह है ।
- ✶ उन्नति प्राप्त करना और आगे बढना यही हर एक जीव का उद्दिष्ट है । आत्मा में परमात्माका साक्षात्कार करना यही जीवन का उद्दिष्ट है ।
- ✶ महान ध्येय का सृजन मौन से होता है ।
- ✶ अपने उद्दिष्ट को कभी मत भूलो, नहीं तो छोटेसे लाभ से ही तुम्हे संतोष होगा ।
- ✶ जिनकेजीवन का उद्दिष्ट निश्चित नहीं , उन्हे कालक्रमण केलिए साधन ढुंढने की आवश्यकता रहती है ।
- ✶ अन्याय और अनीति से ध्येय साध्य नहीं होता । सत्य और धर्म केअनुसरण से हि ध्येयसिद्धी होती है ।
- ✶ तुम्हारा उद्दिष्ट सतत तुम्हारी ऑखों केसामने रहने से हि उद्दिष्ट साध्य होता है । ध्येयहिन जीवन यह दिशाहीन नौका केसमान है ।
- ✶ लक्ष्य केबिना मार्ग नहीं , ध्येय केबिना जीवन नहीं ।
- ✶ अपने जीवन का उद्दिष्ट सुख नहीं सत्य चाहिए ।
- ✶ कार्यशक्ति और इच्छाशक्ति प्राप्त करो , कठीण परिश्रम करो, व तुम्हे निश्चित रुप से प्राप्त होगा ।

पाप

- ✶ ज्ञान केप्रकाश से पाप का अंध:कार दूर होता है ।
- ✶ पाप केअग्निकुंड में आदर, मान, साहस और धैर्य की क्षण में आहूती पडती है ।
- ✶ जो ह्रदय में हमेशा रहता है, खटकता है वही पाप है ।
- ✶ दूसरों का कल्याण करनेवाला पुण्य है , और दूसरों का दिल दुखानेवाला पाप है । अन्याय के साथ संधि करना भी पाप है ।

✶ शुरु मे पाप उष:कालीन प्रकाश केसमान चमकता है , लेकिन उसका अंत रात्री केअंध:कार केसमान होता है ।

✶ पाप इतना सुंदर पोषाख पहनकर आता है,कि उसे ह्रदय से लगाने को जी चाहता है । परपीडा , परनिंदा भी पाप है ।

✶ एक पाप छुपाने केलिए आदमी को दुसरा पाप करना पडता है । पाप का घडा पूरा भरनेपर फूटे बिना नहीं रहता ।

✶ जो पाप नही करता वही भगवान है , और जिसे पाप करनेपर पश्चाताप नहीं होता वह दानव है ।

✶ दूसरों का पाप अपनी ऑखों केसामने होता है , और अपना पाप अपने पीठ पीछे होता है । पाप की कबुली याने मुक्ति का शुभारंभ ।

✶ पाप जबतक अपरिपक्व रहता है, तबतक मीठा लगता है, पक्व होनेपर वह दुख देता है ।

✶ पाप पापी को कभी सुख से सोने नहि देता । जो पाप नहीं करता वह निर्भय होता है , उसे आनंद का वरदान मिलता है ।

✶ पापी आदमी केदुष्कृत्य उसीपर उलटते है । पापाचार का त्याग कियेबिना आदमी निर्भय नहीं बन सकता ।

✶ पाप यह ओछी चद्दर केसमान है । सिरपर ओढ ली तो पैर खुले रहते है ।

परिश्रम या पुरुषार्थ

✶ परिश्रम जीवन की सफलता का रहस्य और आत्मा का भूषण है ।

✶ पुरुष का सौंदर्य उसकेकर्तृव्य में होता है, पोषाख में नहीं ।

✶ पुरुषार्थ को कल्पकता की साथ मिलनेपर अद्‌भूत कार्य होते है ।

✶ पुरुषार्थ से सभी कठिनाईयों को पराजित करना संभव है ।

✶ परिश्रम से शरीर निरोगी रहता है और मन निर्मल ।

- ✶ कठोर परिश्रम से हि सफलता प्राप्त होती है, केवल विचार करने से नहीं ।
- ✶ श्रद्धा केजल का सिंचन करने से परिश्रम का वृक्ष फलों से भर जाता है । परिश्रम केबिना भाग्य पंगु बनता है ।
- ✶ परिश्रम में हि मानवता निवास करती है । परिश्रमसे प्राप्त न होनेवाली वस्तु इस दुनिया में अभी पैदा नहीं हुई ।
- ✶ जो अपने बच्चो को सतत कार्यरत होने की शिक्षा देते है , वे उनको संपत्ति से भी श्रेष्ठ भेट देते है ।
- ✶ जीवन को नंदनवन का रुप देनेवाला परिश्रम यह एक श्रेष्ठ कलाकार है ।
- ✶ जो उचित समयपर अपना कार्य करता है, उन्हे जीवन में कभी पश्चाताप नहीं करना पडता ।
- ✶ जिनका अपने कर्तृत्वपर विश्वास है, वे स्वीकृत किये हुए कार्य में असफल नहीं होते ।
- ✶ पसीना बहाए बिना प्राप्त हुई सुख और समृद्धि अस्थिर होती है । पसीना बहानेवालोंको हि सिद्धि प्राप्त होती है ।

कार्य

५. बडे बडे कार्य ताकद से नहीं सहनशक्ति से पूरे होते है ।
६. कोई भी कार्य निष्ठापूर्वक करो, कीर्ती तुम्हारे पीछे दौडती हुई आयेगी । प्रत्येक अच्छा कार्य आरंभ करने केपहिले वह असंभव लगता है ।
७. मनुष्य का गौरव उसकेरुपसे या कुलसे नहीं बढता । मनुष्य केकार्य से , उसकेकर्तृत्व से हि उसका गौरव बढता है ।
८. कर्म का विचार करने से व्यक्ति नम्र बनता है, और धर्म केविचार से निर्भयता प्राप्त होती है ।
९. कर्म यह कामधेनु है, जिसको दोहना आता है उसको आनंद-रुपी दूध प्राप्त होता है ।

१०. कर्म का ध्वनी शब्द से श्रेष्ठ रहता है । सिर झुकाना पडेगा ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए ।

११. क्षुद्र व्यक्ति विध्न केभय से किसी काम का आरंभ नहीं करता, मध्यम प्रति केलोग कार्य का आरंभ करते है , लेकिन विध्न आने से अधुरा छोड देते है । लेकिन कर्तृत्ववान व्यक्ति संकटों केपर्यंत आनेपर भी हाथ का कार्य अधुरा नहीं छोडते ।

१२. ईश्वर केपास एक कदम बढाना यह शुभ कार्य है ।

१३. तुम्हारे पास जो छोटा काम है, उसे पहले पूरा करो, बडा काम स्वयं तुम्हारे पीछे आयेगा । क्रिया केबिना बोलना व्यर्थ है ।

१४. शुभ कार्य से लक्ष्मी की उत्पत्ती होती है । जो अपना कार्य समय पर करता है , उसे पश्चाताप करने की बारी नहीं आती ।

१५. अच्छे कार्य की लगन योग्य दिशा दिखाये बिना नहीं रहती ।

१६. आलस्य में बिताकर सौ साल जिनेसे , उद्योग में बिताया एक दिन भी अच्छा ।

चिंता

✶ चिंता जीवन का शत्रु है । चिंता मधुमख्खी केसमान है , उसे जितना दूर हटाओ उतना हि अधिक पास आती है ।

✶ आदमी मन में व्यर्थ चिंता करता है, कार्य तो अकस्मात हो जाता है । चिंता शरीर का शोषण करती है ।

✶ जो दूसरों की चिंता नहीं करता उसीको जीवन में शांति और आराम मिलता है । व्यर्थ की चिंता करने से कोई लाभ नहीं उससे कोई भी कार्य सफल नहीं होता ।

✶ भविष्य की चिंता छोड दो उससे कोई भी कार्यसिद्धि नहीं होती चिंता करनी हो तो अपने चारित्र्य की करो । मनुष्य प्राणी को चिंता का हि ज्वर रहता है ।

✶ चाह गई चिंता । मिटी, मनुआ बेपरवाह ।
जिनको कुछ न चाहिए, सोई साहंसाह ।।

- चिंता मनुष्य केजीवन में जहर घोलती है । अनेक पापों की वह जननी है । भविष्य में होनेवाले विपत्ति की चिंता करकेहम जीवन में बहुत बडा मूल्य चुकाते है ।
- वर्तमान केसूर्यको भविष्य बादल केपीछे छुपाने का नाम हि चिंता है । चिंता जीवन को लगा हुआ जंग है । यह चिंतारुपी जंग मनुष्य केजीवन केतेज हर लेता है, और उसे दुर्बल बनाता है ।
- चिंता से रुप, शक्ति और ज्ञान नष्ट होती है । चिंता यह एक मानसिक रोग है, यह मोह और भय से निर्मित होती है ।
- चिंता से मन:स्वास्थ्य और शरीरस्वास्थ्य दोनों नष्ट होते है ।
- झूठी चिंता से सच्चे जीवन से हम भागते है । भयानक चिंतासे ग्रस्त होने जैसी गंभीर बात इस दुनिया में कोई नही ।

विद्या

- विद्या यह एक शक्ति है । विद्या मौलिक और अक्षय धन है ।
- विद्यारुपी शरीर को शोभायमान करनेवाली दूसरी कोई चीज नहीं । विद्यारुपी अंगूठी विनयरुपी रत्न प्रकाशित होता है ।
- विद्या यह पुरुषकी कीर्ति है । विद्या यह कामधेनु है । विद्या बिना जीवन व्यर्थ है।
- उत्तम चारित्र्य और सदाचार यह विद्या का फल है ।
- विद्या से विनय , विनय से योग्यता , योग्यता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है ।
- विद्या का दान भोजन दान से श्रेष्ठ है । अन्न से क्षणिक तृप्ति मिलती है , और विद्या से जीवनभर का सुख ।

- ✶ किताबे पढकर ज्ञान जमा करना याने विद्या नहीं । विद्या का उपयोग जीवन में होना चाहिए, तभी वह सार्थक होती है ।
- ✶ विद्याधन को कोई चुरा नहीं सकता , दंड केरुप से राजा उसे छिन नहीं सकता, भाइयों में उसका विभाजन नहीं हो सकता कितनी हि कमाओ उसका बोझ नहीं बढता , दान देनेसे वह बढती है, इसीलिए विद्याधन सभी धनोंसे श्रेष्ठ है ।
- ✶ विद्यारुपी रत्न की किमत बुद्धिमान व्यक्ति हि कर सकता है ।
- ✶ विद्या केप्रकाश से अंध:कार नष्ट होता है । विद्या को विनय से शोभा आती है ।
- ✶ आत्मा स्वयंको , ईश्वरको और सत्यको पहुचाननेवाली विद्याहि सच्ची विद्या है ।
- ✶ गुरुबिना विद्या नहीं , संगति शिवाय शील नहीं और विद्या बिना कार्यप्राप्ति नहीं होती ।

अहिंसा-हिंसा

- ✶ अहिंसामय आचरण से देवत्व की प्राप्ति होती है । अहिंसा केप्रभाव से आत्मशक्ति जागृत होती है ।
- ✶ कुछ लोग क्रोध में हिंसा करते है, कुछ मोह से हिंसा करते है, तो कुछ अज्ञान से हिंसा करते है । लेकिन हिंसा केकटु-फल से आदमी मुक्त नहीं हो सकता ।
- ✶ अहिंसा मूलक समता धर्म का सार है । किसी भी प्राणी की हिंसा करना पाप है।
- ✶ जीओ और जीने दो और जीने केलिए समर्थ बनो यही जैन लोगों की अहिंसा का रहस्य है ।
- ✶ अहिंसा यह सभी आश्रमों का ह्रदय और सभी शास्त्रों केनिर्मिती का स्थान है ।
- ✶ भय और अहिंसा एकनाथ नहीं रह सकती । क्योंकि अहिंसा पालन केलिए धैर्य की आवश्यकता है ।
- ✶ लोभ या कपट हिंसा की जननी है । आलसीपन भी हिंसा का एक रुप है । हिंसा का सौम्य रुप याने द्वेष ।

- अहिंसा केदो रुप है १)आंतरिक २)बाहय । राग, द्वेष, मोहादि विकारों का त्याग करते शुद्ध बनना यह आंतरिक अहिंसा । अंतरंग पवित्र होने केबाद निर्माण होनेवाला करुणा भाव यह बाहय अहिंसा है ।
- हिंसादि पॉच पापों का त्याग करकेव्रत ग्रहण करने से हि चारित्र्य प्राप्त होता है।

विवेक

- विवेक मनुष्य का सबसे बडा मित्र है ।
- विवेक याने बुद्धि की पूर्णता । जीवन केसभी कर्तवों का उचित मार्ग वह दिखाता है ।
- असाध्य को पहचानना यह विवेक का पहला कार्य, और सत्य को पहचानना यह दूसरा कार्य है ।
- मनुष्य की निरंतर प्रसन्नता यही विवेक की पहचान है ।
- मनरुपी हाथी को विवेकरुपी अंकुश से वश किया जाता है ।
- विवेक भ्रष्ट मनुष्य अधोगतिकी ओर बढता है ।
- सुवर्ण में जडे हुए रत्न केसमान विवेक केसुवर्ण में जडा हुआ मनुष्यरुपी रत्न सुंदर दिखाई देता है ।
- विवेक को गुरु बनाकर यथा बाचा तथा कृति और यथा कृति तथा वाणी रखो ।
- लक्ष्मी और, विवेक एकनाथ नहीं रह सकते ।
- दूध और पानी में से हंस केवल दूध ग्रहण करता है, उसी तरह विवेकी व्यक्ति दुनिया की सुंदर बाते ग्रहण करता है ।
- फल से वृक्ष की, कसौटि से सोने की, आवाज से घंटा की और विवेक से मनुष्य की परिक्षा की जाती है ।
- गहन छाया देनेवाले वृक्ष से विवेक की छाया अधिक शीतल रहती है ।

✶ विवेक और सद्‌चारित्र्य से जीवन में सुख और शांति मिलती है ।

✶ विवेकहीन अज्ञानी मनुष्य की संपत्ति बहुत जल्दी नष्ट होती है ।

संस्कार

✶ उत्तम संस्कार यहि सच्ची शिक्षा है ।

✶ संस्कार जीवन का मूल है । संस्कार से हि भावी जीवन निर्माण होता है ।

✶ संस्कार से हि संस्कृति की निश्चिती होती है ।

✶ आदमी केमन में हमेशा संस्कार का झगडा रहता है । भूत-कालिन संस्कार और वर्तमानकालिन संस्कार में झगडा होता है ।

✶ संस्कार की छाया ही आदमी केजीवन में हमेशा छाया देती है ।

✶ आदर्श संस्कार यही समाज का और राष्ट्र का आधार है ।

✶ शुभ संस्कारों से धर्म प्रकट होता है, अंतरंग पवित्र होता है ।

✶ माता केसंस्कार केबिना बालक का भवितव्य नहीं । और बालक केभवितव्य केबिना देश का उद्धार नहीं ।

ह्रदय

✶ ह्रदय की कोई भाषा नहीं होती । ह्रदय ह्रदय से हितगुज करता है ।

✶ तलवार से भी ह्रदय बलवान होता है । सत्कार्य मानव ह्रदय केकिर्तिमंदिर है ।

✶ ज्ञानी व्यक्ति का ह्रदय दर्पण केसमान रहता है । किसी भी वस्तु को दुषित किए बिना वह उसका सच्चा प्रतिबिंब दिखाता है ।

✶ एक सच्चा ह्रदय दुनिया की सर्व शक्ति से भी अधिक मौल्यवान है ।

✶ तेजस्वी भावना से ह्रदय को पवित्र, उन्नत और स्वर्गिय बनाता है । शुद्ध, निर्मल ह्रदय सभी तीर्थों में से श्रेष्ठ और सबसे पवित्र है ।

✶ ह्रदय पुष्प केसमान है । कोमलता में से चूनेवाले ओस केबिंदू केलिए वह विकसित करता है, और धुऑधार वर्षा में वह बंद होता है। मनुष्य ह्रदय का देवत्व कभी कभी जागृत होता है । लेकिन पशुत्व हमेशा जागृत रहता है ।

✶ ह्रदय का धर्मकोमलता है , देह का धर्म दुर्बलता है, देह को मजबुत बनाओ , ह्रदय को फुल से भी जादा कोमल बनाओ ।

✶ मन को सहस्त्र नयन है लेकिन ह्रदय को एक हि नेत्र है । इसी कारण प्रेम का अस्त होते हि जीवन का अस्त हो जाता है ।

✶ दूसरों का ह्रदय जीतनेवाला भाग्यवान है , लेकिन अपना ह्रदय जीतनेवाला उससे भी जादा भाग्यवान है ।

✶ ह्रदय में अपार सेवा का भाव निर्माण हुआ कि सभी मित्र दिखाई देते है । अपना पवित्र ह्रदय परमात्मा का सुंदर मंदिर है ।

✶ जिस ह्रदय में द्वेषाग्नि भरा हो वहॉ धर्मांकुर नहीं हो सकता ।

✶ सुंदर मुख व्यक्ति की सिफारिस करता है और सुंदर ह्रदय अधिक विश्वासपात्र होता है । अपना ह्रदय प्रेम से भरा हुआ रहता है, तब सारी प्रकृति सुंदर दिखाई देती है ।

दोष

✶ हजार गुणों की प्राप्ति सरल है, लेकिन एक दोष हटाना मुष्किल ।

✶ दूसरों केदोषों का वर्णन तुम्हारे सामने करनेवाले लोग, तुम्हारे दोषों का वर्णन तिसरे के सामने करेंगे यह निश्चित बात है ।

- ✶ खुद केदोषों की नहीं पहचानना यह सबसे बडा दोष है मृत्यु केपहिले अपने दोष की नष्ट करो ।
- ✶ तुम्हारे दोषों की प्रकट करनेवाली व्यक्ति तुम्हे गुप्त धन का संचय बताता है । स्वंय दोषपूर्ण होने से हि दूसरों केदोष ढुँढना अच्छा लगता है ।
- ✶ नाम रखना सरल है लेकिन नाम कमाना मुष्किल । दुर्बलता यही सबसे बुरा दोष है ।
- ✶ उपेक्षा करना होगा तो मै अपनी करुंगा । क्योंकि दूसरों केदोषों से मै खुदकेदोष अच्छी तरह जानता हूँ ।
- ✶ आत्म निरीक्षणरुपी दर्पण अपने दोष बतानेवाला उत्तम साधन है ।
- ✶ अपनी कार्य को निर्दोष समझानेवाली व्यक्ति कोई भी कार्य नहीं कर सकती । नव्वे प्रतिशत लोग अपने दोष स्वीकार करना नही चाहते ।
- ✶ भय नष्ट होनेवाले दोषोंसे, प्रशंसासे पुष्ट होनेवाले गुणों की संख्या अधिक है । दूसरों के दोष दिखाने में आनंद लेने की प्रवृत्ति अत्यंत क्षुद्र है ।
- ✶ अंतरंग केदोष जबतक नष्ट नहीं होते तबतक सैंकडो उपवास करने को फलश्रुति शून्य है । अपने दोषहि आदमी को डरपोक बनाते है ।

गरीबी

- ✶ धनवान होकर धन की अधिक लालसा रखनेवाले गरीब ही है ।
- ✶ गरीबी खानदान को निचा दिखा सकती । गरीबी नम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है ।
- ✶ निराशवादी धनवान से आशावादी गरीब श्रेष्ठ है । गरीबी में हि सभी प्रकार की कलएँ फलती फुलती है ।
- ✶ जिसकेपास पैसा है सिवा कुछ नहीं वह सबसे जादा गरीब है ।

✶ जो गरीबपर दया दिखाता है वह अपने सत्कृत्य से भगवान को ऋणी बनाता है ।

✶ गरीब होना और गरीबी का प्रदर्शन करना , ये दोनों बाते उन्नत्ति केमार्ग में बाधा डालती है ।

✶ दारिद्र्य यह दुर्गुण नहीं वह आपत्ति है । गरीबी यह स्वंय को गरीब सनझने में हि है ।

✶ ईश्वर गरीब को गरीब रखकर उसकेहिम्मत की कसौटि लेता है ।

✶ गरीबी यह प्राणघातक और प्रचलित रोग है ।

✶ आलसीपन , व्यसन, मूर्खता और खर्चिकता से आयी हुई गरीबी यह शर्मनाक होती है । दैवी आपत्ती से आयी हुई गरीबी में शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं ।

✶ गरीब की दु:ख की अनुभूति होती है, लेकिन धनवान को वह बुद्धि से जानना पडता है ।

✶ गरीबी में मिला हुआ समाधान यह सच्चे धनवत्ता का लक्षण है ।

✶ गरीबी केआशिर्वाद यही सच्ची संपत्ति है ।

कवि-कविता

✶ कवि आत्मा का चित्रकार है । सभी व्यक्ति ह्रदय से कवि हि रहते है ।

✶ क्षण में जीता है वह मनुष्य है, और जो क्षण को जीवित करता है वह कवि है ।

✶ शब्द कवि को अमर बनाते है और कवि शब्दों को भाग्यवान ।

✶ कवि जन्म से हि रहता है, उसको कोई बना नहीं सकता ।

✶ अंधेरी रात में अकेला हि अपने अकांतवास को साथ देकर गानेवाला नाइटिंगेल पक्षी भी कवि है ।

✶ कवि यह प्रतिदेवता केपैरों की पायल है । काव्य यह प्रतिभा का नर्तन है । अनिवार्य भावना का उद्रेक याने काव्य ।

✶ मानवता केउच्चतम अभिरुचि की अभिव्यक्ति याने काव्य ।

✶ कविता यह भावना का संगीत है । शब्दबद्ध संगीत से वह हमतक पहुँचता है ।

✶ कविता यह चेतना है , कविता गीत है, कविता कृति का अंत:तेज है, भविष्य का मार्ग प्रकाशित करनेवाली वह तारका है, धने अंध:कारमें मार्गदर्शन करनेवाली दीपीका है ।

✶ कविता यह ज्ञानरुपी का अत्तर है । कविता यह गहन, ह्रदय-गम्य सत्य का आलाप है ।

✶ भावना केरंग में रंगी हुई बुद्धि याने काव्य ।

संतोष

✶ संतोष आनंद का जन्मस्थान है । संतोष यह किसी भी साम्राज्य से श्रेष्ठ है ।

✶ संतोष निजपरमात्मा का दूसरा रुप है । उसकेप्रति श्रद्धा और भक्ति द्धारा हि वह प्राप्त होता है ।

✶ संतोष मानवता में है , निर्मल प्रेम में है, वृथा अभिमान , धन , और कुल का अभिमान किसी काम का नहीं ।

✶ संतोष यह प्राकृतिक सौंदर्य है और ऐश्वर्य कृत्रिम गरीबी ।

✶ संतोषधन प्राप्त होनेपर दूसरी वस्तुएँ तुच्छ कूडा करकट केसमान दिखाई देती है ।

✶ हम जैसा चष्मा लगाऐंगे , दुनिया वैसीहि दिखाई देगी । संतोष का चष्मा लगाने से दुनिया प्रसन्न दिखाई देती है ।

✶ वस्त्रहिन , भुखा यदि तृप्त हो तो वही सच्चा धनी है । सारी दुनिया का स्वामी यदि लोभी हो तो वह सबसे गरीब है ।

✶ दुनिया की सारी सूखसुविधाएँ उपलब्ध होनेपर भी मन कभी तृप्त नहीं होता ।

✶ संतोष का पूल टूटनेपर अमर्याद् अच्छाओं केस्त्रोत बहने लगते है ।

✶ निजपरमात्मा को प्रिय होना है तो प्राप्त स्थिती में संतोष मानना चाहिए । असंतोष यह उत्कर्ष की सीढी है, संतोष नहीं ।

✶ संतोषरुपी अमृत से जिनकी चित्तवृत्ति प्रफुल्लित होती है, वही लोग चॅहुओर धूमनेवाले द्रव्यलोभी को नहीं मिल सकता ।

कीर्ति-यश-प्रसिद्धि

✶ कीर्ति की तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती । कीर्ति याने कर्तृत्व का सुगंध । शत्रुद्धारा की गई प्रशंसा यह सर्वोत्तम कीर्ति है ।

✶ कीर्ति यह कुलका सुंदर स्वप्न है और पैसा आजकी रोटी । कीर्ति आती है तब स्मृति अद्श्य हो जाती है ।

✶ कीर्ति प्राप्त करने केलिए भलाई अनेक काम करने पडते है, लेकिन दुष्कीर्ति केलिए बुराई का एकहि काम बस होता है ।

✶ कीर्ति का नाश मद्य केनाश से भी भयानक होता है । एकबार मद्यपी छोड सकता है, लेकिन कीर्ति का मोह छुटना असंभव है ।

✶ यश-कीर्ति का मार्ग स्वर्ग केमार्ग केसमान कठिण है । यश की प्राप्ति त्याग से होती है, छलकपट से नहीं ।

✶ जलने लायक वस्तु होनेसे कि लकडी जलती है, उसी प्रकार गुणसंपन्न व्यक्ति कीर्ति प्राप्त करता है ।

✶ मृत्यु का स्वीकार करो, लेकिन अपना यश पीछे छोडो ।

✶ अपने अंतरंग की आवाज पहचानकर किया जानेवाला आचरण यश संपादक केलिए सहाय्यभूत होता है ।

✶ उद्यमशीलता , बुद्धिमता और सातत्य से हि कीर्ति और सद्भावना प्राप्त होती है । दूसरों के अश्रू पोंछना यही कीर्ति है ।

✶ समुद्र में गहरे पानी पैठकर हि मोती की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार मृत्यु की सींप में बंध होनेपर मनुष्य की कीर्ति बढती है ।

सेवा

✶ सेवा यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है और वही जीवन का आधार है । सेवा से शत्रु भी मित्र बन जाता है ।

✶ सेवा ह्रदय और आत्मा को पवित्र करती है , सेवा से ज्ञान प्राप्त होता है, सेवा यही जीवन का लक्ष्य है ।

✶ मातृभाव से की हुई सेवा से, आत्मभावसे की हुई सेवा श्रेष्ठ है ।

✶ सेवा का आधार पैसा नहीं, ह्रदय और इच्छा है ।

✶ कुटुंब की सेवा मोह ममता मूलक नहीं होना चाहिए वह कर्तव्य बुद्धि से करना चाहिए ।

✶ सेवा का मार्ग भक्तिमार्ग से श्रेष्ठ है । जो मूक बनकर सेवा करते है, उन्हीकी सेवा श्रेष्ठ है ।

✶ प्रीती मन को प्रफुल्लित करती है, सेवा दुनिया को प्रफुल्लित करती है । गरीब की सेवा यही ईश सेवा है ।

✶ स्वयंपूर्ण सेवा और स्वतंत्र बनना यह भी एक प्रकार की सेवा हि है ।

✶ सेवाधर्म इतना कठिण है की, योगी लोग भी उसतक पहुॅच नहीं पाते ।

✶ दूसरों की सेवा करना याने इस पृथ्वीपर रहने का किराया चुकाना है ।

✶ सेवा केलिए पैसों की नहीं, बल्कि अपनी संकुचितता छोडनेकी और गरीबों से एकरुप होने की आवश्यकता होती है ।

✶ द्वेषबुद्धि और छलकपट का त्याग करो । संघटित होकर दूसरों की सेवा करना सीखो ।

विचार

- ✶ भाग्य का दूसरा नाम विचार है । तुम्हारा सौख्य तुम्हारे विचारोंपर निर्भर है ।
- ✶ विचारों का चिराग बुझ गया तो आचार अंधा बनता है ।
- ✶ जिसकी सहायता केलिए सुंदर विचार रहते है वह कभी अकेला नहीं होता । मन की सुंदरता सुंदर विचारोंपर अवलंबित होती है ।
- ✶ पवित्र विवारों का चिंतन-मनन करते हुए बुरे संस्कारों को नष्ट करना चाहिए । विचारशून्यता ही आज केपीढी की सार्वजनिक आपत्ति है ।
- ✶ मानव का इतिहास , यह विचारों का हि इतिहास है । वैंचारिक घुमट याने स्वर्ग का राजमहल ।
- ✶ मनुष्य की वृद्धि केवल शारीरिक नहीं, वह विचारों से होती है, विचारों को वाचन का सहकार्य मिलता है ।
- ✶ मनुष्य खुद केबारे में जैसा सोचता है , वैसा हि बनता है ।
- ✶ मनुष्य जिस प्रकार से सोचता है , उसी विचारों की लहरे उसकेआजूबाजू केवातावरण में फैलती है ।
- ✶ दुनिया में कोई भी चीज अच्छी या बुरी नहीं होती अपने विचार ही उसे वह रुप देते है । एक अच्छा विचार अनेक बुरे विचारों कीं दूर करता है ।
- ✶ जो मनुष्य विचार कम करता है , वह जादा बाते करता है । विचारी आदमी बहुत कम बोलता है । आदमी केविचारों का प्रतिबिंब उसकेचेहरेपर दिखाई देता है ।
- ✶ शुद्ध विचार , बंधुभाव , प्रामाणिकता और सच्ची निष्ठा ये सद्‌गुणी व्यक्तिमत्व केविशेष गुण है । विचार, उच्चार और वाणी इसमें समन्वय चाहिए । ये पुरुषार्थ केलक्षण है ।

पुस्तक-किताब

- ✶ अच्छी किताबों केबिना घर याने दूसरा स्मशान है ।
- ✶ किताबों केसमान दूसरा मित्र नहीं । अश्लिल किताबे पढना याने विषपान करना है ।
- ✶ पुस्तकप्रेमी मनुष्य अत्यंत धनी और सुखी रहता है ।
- ✶ किताबे दान समयरुपी सागर में खडे किए गए दीपस्तंभ है ।
- ✶ स्वर्ग से भी पुस्तकेअधिक श्रेष्ठ है, क्योंकि पुस्तकों द्धारा स्वर्ग निर्माण किया जा सकता है । ग्रंथालय यह साहित्य-वस्त्रालंकार का भांडार है ।
- ✶ बार-बार पढनेपर भी जो ग्रंथ पास रखने की इच्छा होती है वही उत्तम ग्रंथ है ।
- ✶ पुस्तक संग्रह यही आजकेयुग का विद्यालय है । कपडे पुराने पहनो लेकिन किताबे नई खरीदो ।
- ✶ विवारों केधनघोर युद्ध में पुस्तकेशस्त्रों का काम करते है ।
- ✶ पुस्तकेसाबून की तरह तुम्हारा मन साफ करने का काम करते है ।
- ✶ बिना खुली किताब याने केवल रद्दी है । पुस्तक याने जागृत देवता है, उसकी सेवा करके त्वरीत वर प्राप्त होता है ।

पराक्रम

- ✶ पराक्रम यह मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है । दुर्बलों की रक्षा केवल करना यह बलकी सच्ची सफलता है ।
- ✶ सामर्थ्यवान पुरुष काम करते रहते है, दुर्बल केवल बढचढकर बाते करते रहता है । भीरुतापर आत्मा की शानदार विजय यही पराक्रम है ।
- ✶ अपने प्राणों का मोह छोडना यही पराक्रम है । पराक्रम का अर्कयाने कीर्ति ।

- ✶ महान समुद्र की भयंकर लहरों में छोटीसी नौका डुब जाती है, उसीप्रकार विवेक की साथ नहीं रही तो पराक्रम नष्ट होता है ।
- ✶ आत्मविश्वास पराक्रम का सार है । पराक्रम दूसरों को मारने में नहीं, खुद मरने में है । दूसरों की प्रतिष्ठ संभालने में पराक्रम है, नष्ट करने में नहीं ।
- ✶ पराक्रम यह बताने की या दिखाने की वस्तु नहीं, समय आनेपर करकेदिखाने की वस्तु है ।
- ✶ पराक्रमी व्यक्ति अत्यंत क्षमाशील और तंटेबखेडे से दूर रहता है ।
- ✶ छोटी छोटी बातों केलिए अपना पराक्रम नष्ट करने में हिंमत नहीं, उचित कारण केलिए प्राणों की बाजी लगाना उचित है ।
- ✶ हिम्मत यह भीतरी अंतरंग से निर्माण होती है, वह अंको से निर्माण नहीं होती ।
- ✶ शस्त्रास्त्रों केयुद्ध में विजय प्राप्त करने से आत्मविजय प्राप्त करने में शौर्य है ।
- ✶ व्यक्ति में राक्षस केसमान शक्ति चाहिए लेकिन उसका राक्षसी उपयोग नहीं करना चाहिए ।
- ✶ पराक्रम या सामर्थ्य से सुख निर्झर प्राप्त होता है ।

आत्मा

- ✶ संयमी आत्मा ही शक्तिमान होता है । आत्मा की लढाई माया और पंचविकारों से होती है । जीवात्मा केप्रत्येक शरीर में पॉच ज्ञानेंद्रिय, मन और बुद्धि ये सात रत्न रहते है ।
- ✶ आत्मा यह ज्ञानस्वरुप की चेतनशक्ति है । किसी संयोग से वह निर्माण नहीं हो सकती । पापी आत्मा पहिले खुद को नष्ट करता है, बाद में दूसरों को ।
- ✶ साबुन बाहय देह साफ होता है, लेकिन आत्मा की शुद्धता केलिए अखंड तपश्चर्या , आत्मिक शुचिता पवित्र भावना और एक भाव है, वह आत्मा से अलग नहीं ।
- ✶ आत्मा अकेला हि अपने किए कर्मो केफल भुगतता है । दिव्य आत्मा जो चाहता है वही होता है, उसकेसंकल्प उध्वस्त नहीं कर सकता । उन्नति व प्रगति जीवात्मा केलक्षण है ।

- ✶ आत्मस्वभाव में हि सच्चा सुख है, संयोग में नहीं । भुलाभटका अज्ञानी बाहय दुनिया में सुख ढुढॅता है ।
- ✶ आत्मज्ञान से धर्म का प्रारंभ होता है । आत्मापर अटुट श्रद्धा रखने केलिए सीखानेवाला धर्म हि सत्य धर्म है ।
- ✶ आत्मानुभूति ही आत्मसंपत्ति है । आत्मा की निर्मलता से मन की शांति प्राप्त होती है । त्याग यह आत्मा का शृंगार है ।
- ✶ संसार केपरिभ्रमण में दु:ख से हि आत्मा की पहचान होती है । अहिंसा केप्रभाव से आत्मशक्ति जागृत होती है ।
- ✶ आत्मा की व शरीरस्वास्थ्य की दृष्टी से सात व्यसन हानी कारक है ।
  १)द्युत खेलना २) मांस खाना ३) मद्य पीना ४) शिकार ५) वेश्यागमन ६) चौर्यकर्म ७) परस्त्री संग
- ✶ जीव तत्व में हि आत्मप्रत्यय आता है । प्रत्येक आत्मा में अनंत ज्ञान , अनंत सुख भरा हुआ है ।
- ✶ आत्मा का सच्चा मित्र और आत्मा हि आत्माका सच्चा शत्रु है । आत्मापर नियंत्रण यही संयम है ।
- ✶ प्रत्येक आत्मा सदाचारी है । सदाचार की कमाल मर्यादा याने वितरागता है ।
- ✶ विशुद्ध आचरण की मन:प्रवृत्ति बिना आत्मशक्ति का विकास नहीं होता । योग यह आत्मा की शक्ति है ।
- ✶ आत्म परीक्षण यह सुधार की पहिली सीढी है । तप से आत्म शुद्धि और कर्म की निर्जरा होती है ।
- ✶ आत्मा की प्रीती संपादन करनेवाला विश्व का राजा बन सकता है । आत्मनिश्चय राजयोग की प्रथम सीढी है ।
- ✶ हास्य आत्मा का संगीत है । आत्मनिग्रह सुखी होने का सर्वोत्तम उपाय है ।
- ✶ आत्मा का परमात्मा केसाथ मिलन यह सर्वश्रेष्ठ मिलन है ।

- ✶ सच्चा आत्मा सदा प्रसन्न रहता है । उसकेजीवन में दुख प्रवेश नहीं कर सकता । धन की लालसा , परस्पर द्वेष , मत्सर, ईर्षा उसमें नहीं होती ।
- ✶ आत्मा में अनेक मौल्यवान मोती छिपे हुए है । उसको ढुँढने केलिए गहरे पानी में डूबने की आवश्यकता है ।
- ✶ जो आत्मा का गुणगान गाता है, उसकी महिमा दुनिया गाती है ।
- ✶ आत्मोन्मुख हुएबिना धर्मसाधना नहीं होती , और धर्मसाधना आत्मा की उन्नति है।
- ✶ जहॉ चेतना है वहॉ आत्मा है, और जहॉ आत्मा वहॉ चेतना ।

जीव

- ✶ जीव संकल्पमय रहता है, और आत्मा सुख-दु:खात्मक ।
- ✶ मृत्यु केबाद को अच्छी गति प्राप्त होना आसान नहीं, इसीलिए जीवन में सत्कर्म करना चाहिए ।
- ✶ कृतकर्म का पूर्ण भोग लिए बिना जीव मुक्त नहीं हो सकता, क्योंकि जीव स्वंय हि कर्म के बंधन में बद्ध होता है । जीवत्व में हि आत्मप्रत्यय होता है ।
- ✶ जीव केदो प्रकार है १) संसारी और २) मुक्त । संसारी जीव शरीरी और मुक्त जीव अशरीरी होते है ।
- ✶ संसारी जीव छोटी छोटी बातो केलिए दूसरों को धोखा देते हि है लेकिन खुद भी धोखा देते है । स्वंय केअविचार से और कुटिल वर्तन से स्वंय हि दु:खी बनते है ।
- ✶ प्रत्येक जीव ज्ञान और स्वभाव से युक्त होता है । जीव कर्म केअधीन नहीं बल्कि कर्म जीव के अधीन है ।
- ✶ अज्ञानी जीव संयोग से पीछे दौडता है,और ज्ञानी जीव केपीछे संयोग भागता है।
- ✶ जीव सर्व उत्तम गुण आश्रय लेते है,सभी द्रव्यों केउत्तम द्रव्य व सभी तत्वों केपरम तत्व याने आत्मा ।

- ✶ जीव अत्यंत सुक्ष्म है लेकिन सुक्ष्म होनेपर भी उसमें अनंत शक्ति भरी रहती है ।
- ✶ प्रत्येक जीव को अपने कर्म का अच्छा बुरा फल वैयक्तिक रुप से भुगतना पडता है । अपने पाप का फल दुसरा नहीं भुगत सकता । फिर स्वजन कौन परजन कौन इसका विचार जिसका उसने करना हि ठिक है ।
- ✶ जीव और अजीव इन दो तत्वों से विश्व भरा हुआ है । चराचर सृष्टि में इन दोनों का प्रपंच रहता है ।

संकल्प

- ✶ संकल्प और सिद्धि दो अलग अलग शिखर है, लेकिन अविरत कष्ट दोनों को जोडनेवाला सेतू है ।
- ✶ जीव संकल्पमय रहता है और संकल्प सुखदु:खात्मक रहते है ।
- ✶ संकल्प केबिना सृष्टि नहीं और मन केबिना संकल्प नहीं ।
- ✶ शुद्ध संकल्प से शुद्ध कामना और अशुद्ध संकल्प से अशुद्ध भावना का उदय होता है । शुद्ध कामना से मनुष्य देवत्व प्राप्त करता है ।
- ✶ शुद्ध संकल्प यह जीवन में एक अमूल्य खजाना है ।
- ✶ श्रेष्ठ संकल्प से वाणी और कर्म भी श्रेष्ठ बनता है ।
- ✶ जिस प्रकार का संकल्प किया जाता है, वैसीहि सिद्धि प्राप्त होती है । जैसा कर्तृत्व वैसाहि कर्म होगा । और जैसा कर्म होगा वैसाहि फल होगा ।

समता-समाधि

- ममता के त्याग के बिना समता नहीं आती ।
- समता तत्व के कारण श्रमण होते है, ब्रह्मचर्य के व्रत के पालन से जो ब्राम्हण होते है, ज्ञान से ज्ञानी और तप से तपस्वी बनते है ।
- विद्यार्थियों ने सब प्रकार के भेदभाव नष्ट करना चाहिए ।
- सामाजिक समाधि चाहिए । समाधि याने समत्वयुक्त चित्त । उस चित्त में विकार का स्पर्श नहीं, अहंता ममता नहीं, संकुचित भाव नहीं, इस प्रकार का जो विज्ञानमय चित्त बनता है, उसका नाम समाधि है ।
- चैतन्यमय आत्मा का ज्ञान याने समाधि ।
- त्याग के बिना समता नहीं, समता के बिना शांति नहीं और शांति के बिना सुख नहीं ।
- चित्त की एकाग्रता यह समाधि है । समाधि याने जागृत अवस्था ।
- समता मृदुवीणा का झंकार है । उससे आत्मा को उन्माद का आनंद होता है । एकाग्रता यह समाधि अवस्था का प्राण है ।
- समताभाव के बिना व्रताचरण और वीतराग बिना संयमादिक पालन याने बंझर भूमी से धान्य निर्माण करने की अपेक्षा है ।

मृत्यु

- मृत्यु लोक यह कर्ताकी टंकसाल है । यहॉ लोग सन्माननीय होते है, वे स्वर्ग में भी सन्मान्य होते है ।
- जीवन के समुद्र में जन्म-मृत्यु की लहरे उमडती है ।
- मृत्यु के बाद आत्मा शरीर का त्याग करता है, लेकिन धर्म अधर्म उसके साथ जाता है ।

✶ मृत्यु अटल है । जन्म केसाथ हि उसका मृत्यु की दिशा में प्रवास शुरु होता है।

✶ जीर्ण शरीर को छोडकर नया शरीर धारण करना इसी का नाम मृत्यु है ।

✶ मृत्यु हर व्यक्ति केपीछे छाया केसमान लगा हुआ हैं इसी लिए जन्म और मृत्यु केबीच का समय संयम से बिताना चाहिए ।

✶ उत्थान का अंत पतन में, संयोग का अंत वियोग में, और जीवन का अंत मृत्यु में होता है । यह त्रिकालाबाधित सत्य है ।

✶ ऐसी मृत्यु का स्वीकार करना चाहिए कि वह मृत्यु फिर तुम्हारे पास न आए ।

✶ जन्म केसमान मृत्यु का गूढ भी अनाकलनीय है । झटपट मृत्यु यह ईश्वरी दया है ।

✶ मृत्यु अटल है, उसको कोई टाल नहीं सकता । इसीलिए मृत्यु का स्वागत करना हि उचित है ।

त्याग

✶ आशा, तृष्णा और स्वच्छंदता इनका त्याग करना चाहिए क्योंकि वही आदमी केदु:ख का कारण है ।

✶ त्याग और सेवा सेहि दुनिया केव्यवहार चलते है । इसीलिए मानव का जन्म है।

✶ त्याग सभी कलाओं का परमोच्च बिंदू है । त्याग का मर्म समझेबिना किया हुआ त्याग बोझ बनकर रहता है ।

✶ देव, देश और मानव की सेवा करना हि जीवन की कृतार्थता है । त्याग में हि सच्चा वैभव है ।

✶ दुर्गुणों का त्याग याने सद्‌गुणों का प्रारंभ है । स्नेह व्यक्ति को त्याग करना सीखाता है ।

✶ त्याग केबिना समता नहीं,समता बिना शांति नहीं और शांति केबिना सुख नहीं।

- ✶ त्याग केमुल्यपर की हुई खरेदी अक्षय होती है । आज केकष्ट में और त्याग में कल का भविष्य है ।
- ✶ सक्ति से किया हुआ त्याग सच्चा त्याग नहीं । त्याग केपीछे सद्हेतु की प्रेरणा चाहिए ।
- ✶ जिसकेपास त्याग की भावना नहीं वह कुछ नहीं कर सकता ।
- ✶ त्याग यह आत्मा का शृंगार है । त्याग, शील, गुण और कर्म से मनुष्य का कर्तृत्व सिद्ध होता है ।
- ✶ जीवन में सबसे बडा अधिकार त्याग से हि मिलना है ।
- ✶ देह केअभिमान का त्याग सबसे श्रेष्ठ त्याग है ।
- ✶ जीवनावश्यक लोभ का त्याग ही जीवन का सच्चा आनंद है ।

वाणी-जिव्हा

- ✶ वाणी का मन में,मन का बुद्धि में बुद्धि का प्राणों में और प्राणों का परमात्मा में लीन होना एक प्रक्रिय है।
- ✶ जिव्हा यह इंच लंबी है, लेकिन छह फूट केआदमी को मारने का सामर्थ्य उसमें है ।
- ✶ वाणी में सुक्ष्म शक्ति है । जहॉ इस शक्ति का सदुपयोग होता है वहॉ समाज उन्नत होता है ।
- ✶ वाणीपर संयम प्राप्त किए बिना मनपर स्वामित्व नहीं मिल सकता ।
- ✶ सत्य बोलना अच्छा लेकिन हितकारक बोलना उससे अच्छा ।
- ✶ सत्य यही वाणी का भूषण है । सत्य वचन से वाणी शुद्ध होती है ।
- ✶ वाणी एक देन है, वाणी और भाषा में फरक है । वाणी एक होती है तो भाषा अनेक ।
- ✶ जिव्हा यह आग केसमान है, अनीतिका कारण है । शरीर को मलिन करने का सामर्थ्य है ।